P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध एवं अलगाववादी प्रवृत्ति पर अध्ययन

सुषमा दुबे
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
जुनवानी, भारत

नीरा पाण्डेय्
प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
जुनवानी, भारत

सारांश

विद्यार्थियों पर उनके माता–पिता के संबंध उनके व्यवहार व प्रवृत्तियों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। एक बालक अपने माता–पिता के साथ क्यों ताल–मेल नहीं बैठा पाता, किन कारणों से उसके अंदर अलगाववादी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु ही इस समस्या पर शोधकार्य किया। प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप में 800 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया, पालक–पाल्य संबंध मापने हेतु डॉ. नलिनीराव द्वारा निर्मित मापनी तथा अलगाववादी प्रवृत्ति मापने हेतु डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। पालक–पाल्य संबंध का अलगाववादी प्रवृत्ति पर प्रभाव पाया गया। विद्यार्थियों के क्षेत्र, लिंग, व जाति के आधार पर भी पालक–पाल्य संबंध का प्रभाव अलगाववादी प्रवृत्ति पर पाया गया।

मुख्य शब्द : पालक–पाल्य संबंध, अलगाववादी प्रवृत्ति।

प्रस्तावना

किशोरावस्था बालक के विकास की एक अवस्था है, जिसमें बालक अपने अंदर अत्यधिक परिवर्तनों का बोध करताहै। किशोरावस्था के ये परिवर्तन सकारात्मक भी होते हैं, तथा नकारात्मक भी। अलगाववादी प्रवृत्ति और व्यवहार भी इन परिवर्तनों का एक प्रमुख उदाहरण है। किशोरों पर उनके माता–पिता के साथ संबंध का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। एक बालक (किशोर) अपने घर, परिवार में अपने माता–पिता के साथ क्यों ताल–मेल नहीं बैठा पाता, किन कारणों से उसके अंदर अलगाववादी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। किशोरों के व्यवहार पर उनके पालक–पाल्य संबंध का प्रभाव पड़ता है? किशोरावस्था में बालकों को यदि माता–पिता का उचित सहयोग, साथ व अपनापन प्राप्त होता है तो वह अपने परिवर्तनों को अपने अंदर होने वाले हलचल या तूफान को अपने माता–पिता के समक्ष बिना किसी हिचक के रख सकता है। जयसवाल संदपि, चौधरी रश्मि (2017) द्वारा यह स्पस्ट किया गया कि पालकों के बालकों के साथ शामिल होने से बच्चों के हर कार्य में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पालक–पाल्य संबंध बालक के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (मोरीनाज, सराफ, ग्रेसू, हडजार, होसर, मारसिन 2017) ।

किशोरावस्था के हर समस्या का समाधान आसानी से खोजा जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता समाज में पालक–पाल्य संबंध को अधिक अच्छा व सुदृढ़ बनाने तथा बालकों की ज्वलंत समस्या अलगाववादी प्रवृत्ति को कम करने के लिए है। समाज का ध्यान किशोरों के समस्याआन की ओर आकृष्ट करना ही इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोधकार्य करने हेतु अध्ययन का उद्देश्य जानना जरूरी होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं–

किशोर विद्यार्थियों के लिंग, जाति व क्षेत्र के आधार पर पालक–पाल्य संबंध का अलगाववादी प्रवृत्ति पर प्रभाव का मापन करना।

साहित्यावलोकन

सम्बन्धित शोध क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं–

मोरीनाज, सराफ, ग्रेसू, हडजार, होसर, मारसिन (2017) ने विद्यार्थियों के विद्यालयी अलगाववाद विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि व उनके मानसिक विकास पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। शोध अध्ययन का निष्कर्ष पाया

गया कि विद्यालयी अलगाववाद विद्यार्थियों, सामाजिक समस्या व शिक्षा को पूर्ण रूप से प्रभावित करता है। जयसवाल संदपि, चौधरी रश्मि (2017) ने पालकों एवं उनके पाल्यों के बीच संबंध एवं पालकों के अपने बच्चों के साथ हर कार्य में शामिल होने के विषय में अध्ययन किया तथा निष्कर्ष पाया कि पालकों के बालकों के साथ शामिल होने से बच्चों के हर कार्य में सकारात्मक प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर भी पाया गया।

सरिता, सोनिका एवं पूजा (2016) ने रोहतक हरियाणा के सेकेन्डरी स्कूल के बच्चों के **पालक–पाल्य** संबंध का तुलनात्मक अ**ध्ययन किया। अध्ययन में उन्होंने** 100 छात्र व छात्रा का चयन किया था जो निजी व शासकीय विद्यालयों से चुने गए थे। अध्ययन में निष्कर्ष पाया कि लड़कों के संबंध में अपने माता–पिता से लड़कियों की तुलना में अधिक अच्छे पाए गए।

फलिप एवं थामस (2014) ने अपने शोध में बालकों के अभिभावकों सहयोग व व्यक्तित्व का अध्ययन काय। इस अध्ययन में निष्कर्ष पाया कि बच्चों व छोटे भाई–बहनों के साथ रहने वाले बच्चों के अभिभावक सहयोग एवं व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया।

वर्मा एवं खान (2014) ने उच्चतर विद्यालय के विद्यार्थियों के पालक–पालय संबंध का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष पाया कि पालक–पाल्य संबंध व आत्मविश्वास के मध्य कोई सार्थक सह संबंध नहीं होता है।

गुरयम एवं हरस्ट, केरने (2008) ने अभिभावको के शिक्षा व अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को दिए जाने वाले समय के विषय में अध्ययन किया तथा निष्कर्ष पाया कि किशोरों के अच्दे व उचित विकास के लिए अभिभावकों का संरक्षण व उनका समय दोनों ही अति आवश्यक व महत्वपूर्ण तथ्य है।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग, जाति, क्षेत्र एवं उनकी अंतक्रिया का अलगाववादी पर प्रवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

चर

स्वतंत्र चर

पालक –पाल्य संबंध

क्षेत्र – ग्रामण, शहरी

लिंग – छात्र, छात्रा

जाति – आरक्षित, अनारक्षित

आश्रित चर

अलगाववादी प्रवृत्ति

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध एवं अलगाववादी प्रवृत्ति पर अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया है। सभी विद्यालय छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के भिलाई शहर के अंतर्गत हैं।

सांख्यकीय विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग, जाति, क्षेत्र एवं उनकी अंतक्रिया का अलगाववादी पर प्रवृत्ति पर प्रभाव के अध्ययन हेतु ।छव्ट। की गणना की गई है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में किशोरों के पालक–पकाल्यसंबंध मापने हेतु डॉ. नलिनीराव द्वारा निर्मित पालक–पाल्य संबंध मापनी का प्रयोग किया गया है तथा अलगाववादी प्रवृत्ति के मापन हेतु डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित अलगाववादी मापनी का प्रयोग किया गया है।

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाआन का परीक्षण

अंतक्रियात्मक परिकल्पना हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण 2X2X2X2 का प्रयोग कर प्रसर विश्लेषण Anova- F-Ratio प्राप्त किया गया।

किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग, जाति क्षेत्र एवं उनकी अंतर्क्रिया का अलगाववादी प्रवृत्ति पर प्रभाव के लिए 2X2X2X2 के प्रसरण का विश्लेषण का सारांश।

सारणी

स्त्रोत	**वर्गो का योग**	**df**	**वर्ग का औसत**	**F**
पालक पाल्स संबंध संपूर्ण	0.015	1	0.015	0.066˙
लिंग	0.090	1	0.090	0.398˙
जाति	0.807	1	0.807	3.584˙
क्षेत्र	0.164	1	0.164	0.728˙
पालक–पाल्य संबंध x लिंग	0.302	1	0.302	1.343˙
पालक–पाल्य संबंध x जाति	0.287	1	0.287	1.277˙
पालक–पाल्य संबंध x क्षेत्र	1.479	1	1.479	0.000˙
लिंग x जाति	4.176	1	4.176	18.554*
लिंग x क्षेत्र	0.085	1	0.085	0.380˙
जाति ग क्षेत्र	0.757	1	0.757	3.363˙
पालक–पाल्य संबंध x लिंग x जाति	1.365	1	1.365	6.066**
पालक–पाल्य संबंध x लिंग x क्षेत्र	0.423	1	0.423	1.877˙
पालक–पाल्य संबंध x जाति x क्षेत्र	1.720	1	1.720	7.640**
लिंग x जाति x क्षेत्र	0.067	1	0.067	0.298˙
पालक पाल्य संबंध x लिंग x जाति x क्षेत्र	0.19	1	0.19	0.082˙
त्रुटि	176.468	784	0.225	
योग	0.19	800		
** 0.01 स्तर पर सार्थक ,	*0.05 स्तर पर सार्थक,		. सार्थक नहीं	

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि, किशोर विद्यार्थियां के पालक–पाल्य संबंध, लिंग, जाति, क्षेत्र का उनके अलगाववादी प्रवृत्ति पर कोई सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया। किंतु पालक–पाल्य संबंध x लिंग x जाति के मध्य अंतक्रिर्यात्मक प्रभाव एवं पालक–पाल्य संबंध x जाति x क्षेत्र के मध्य अंतक्रिर्यात्मक प्रभाव देखने को मिला।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त परिणामों से यह तथ्य स्पष्ट है किशोर विद्यार्थियों के पालक–पाल्य संबंध, लिंग, जाति, क्षेत्र का उनके अलगाववादी प्रवृत्ति पर कोई स्पस्ट पृथक रूप से मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया किंतु इन सभी का अंतक्रिर्यात्मक प्रभाव किशोर विद्यार्थियों के अलगाववादी प्रवृत्ति पर पड़ता है । आरक्षित छात्रा में अलगाववादी प्रवृत्ति आरक्षित छात्र की तुलना में अधिक पायी गई तथा अनारक्षित छात्रों में छात्राओं के तुलना में अलगाववादी प्रवृत्ति अधिक पायी गई। उच्चतम पालक–पाल्य संबंध वाले ग्रामीण आरक्षित व अनारक्षित विद्यार्थियों के अलगाववादी प्रवृत्ति निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले ग्रामीण आरक्षित विद्यार्थियों एवं अनारक्षित से कम पाई गई तथा उच्चतम पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी आरक्षित व अनारक्षित विद्यार्थियों में अलगाववादी प्रवृत्ति निम्न पालक–पाल्य संबंध वाले शहरी आरक्षित व अनारक्षित विद्यार्थियों से पाई गई।

पालकों को अपने बच्चों को ना अधिक स्वतंत्रता दिया जाना चाहिए ना ही अधिक संरक्षण देना चाहिए। अधिक संरक्षण लाड प्यार के कारण भी बच्चे आत्मनिर्भर नहीं बन पाते और समाज के साथ समायोजन नहीं कर पाते तथा उनमें अलगाववादी प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है । पालकों द्वारा बालकों के साथ संप्रेषण उचित ढंग से किया जाना चाहिए । उचित संप्रेषण के अभाव में पालक पाल्य संबंध खराब हो जाते हैं और उनमें मानसिक अस्थिरता के उत्पन्न होने का भय रहता है। अत्यधिक उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर या निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर दोनों ही पाल्यों पर ऋणात्मक प्रभाव डालते हैं । सुख सुविधाओं की कमी या अधिकता दोनों से बालकों में विकास में बाधा उत्पन्न होती है । संतुलित विकास हेतु पालकों को यह ध्यान होना चाहिए कि उनके पाल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव ना पड़ने दें । पालक, लिंग के आधार पर अपने पाल्यों में किसी प्रकार का अंतर ना करें क्योंकि किशोरावस्था ही ऐसी अवस्था है जिसमें बालक में शारीरिक व मानसिक विकास की दृष्टि से संघर्ष बना होता है, ऐसे में पालकों द्वारा किए गए व्यवहार का बच्चों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। अलगाववादी प्रवृत्ति के विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों को भी सचेत रहना चाहिए क्योंकि बहुत सी बातें विद्यार्थी घर परिवार में ना बता कर शिक्षक को बता सकते हैं अतः शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के साथ उचित एवं परस्पर सहयोग के संबंध का निर्माण किया जाना चाहिए। शिक्षकों को किशोरों के माता–पिता से भी संबंध स्थापित करना चाहिए, इससे व किशोरों की समस्याओं को सुलझा कर उनमें अलगाव वादी प्रवृत्ति के विकास को रोक सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

व्रर्मा एवं ख़ान (2014). ए स्टडी ऑफ पेरेंट चाइल्ड रिलेशनशिप आन सेल्फ़–कॉन्फिडेन्स ऑफ द स्टूडेंट ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल ऑफ दुर्ग डिस्ट्रीक. इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च परिपेक्स, 3(2), 77–78.

सरिता, सोनिया, पूजा (2016). ए कंपॅरेटिव स्टडी आन पेरेंट चाइल्ड रिलेशनशिप ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च 2016: 2(6), 1000–1002.

फिलिप, थॉमस, (2014) रिलेशनशिप बिट्वीन पेरेंटल सपोर्ट आंड पर्सनालिटी आ कंपॅरटिव स्टडी अमॉग चिल्ड्रेन विथ सिबिलिंग एंड ओन्ली चिल्ड्रेन. ज़ेनीथ इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च.

मोरिणाज़, सचरफ़, ग्रेकू, हाद्जार, हसचेर, मार्सिन (2017), स्कूल एलिनेसन– ए कन्स्ट्रक्शन स्टडी फ़ोर्निटलाइन लर्निंग रिसर्च, 5 (2), 36–59.

जैसल, चौधरी (2017), ए रिव्यू ऑफ द रिलेशनशिप बिट्वीन पेरेंटल इनवॉल्वमेंट एंड स्टूडेंट्स, एकेडेमिक परफार्मेन्स, द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकॉलजी, 4, (3), 99.